आतंकवाद का वैश्वीकरण

*डॉ. प्रमोद भारतीय

शोधपत्र-अर्थशास्त्र

आतंकवाद 20वीं शताब्दी का हिंसक व अमानवीय अस्त्र सिद्ध हुआ। आतंकवाद यानि भय की राजनीति, बल की राजनीति, आतंक का जन्म तो राजनीति की कोख से ही हुआ है। एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र पर वर्चस्व कायम करने का स्वप्न और स्वप्न साकार करने के लिये घुसपैठियों को माध्यम बनाना। आतंकवाद की आरंभिक लड़ाई कुछ ऐसी ही थी लेकिन शेर की सवारी करते–करते जब शेर ने हिंसक होकर अपने सवार को ही ग्रास बनाने का प्रयास चालू कर दिया है तब आतंकवाद की भयावहता का उदघाटन किया जा रहा है । जब इसकी बलि वेदी पर लाखों निर्दोषों का रक्त चढ़ चुका है, तब मानवीयता की दुहाई दी जा रही है। यह विडम्बना ही है कि साम्प्रदायिकता और आतंकवाद के नाम पर बड़ी कीमत चुकाई गई है। मानव अधिकार मनुष्य को पाश्विक बनने से रोकने की पहल करता है, परन्तु क्या यह बात इस राष्ट्र के या विश्व के कर्णधारों को भी समझ में आती है, जो अपने–अपने दलों को बचाने, अपनी–अपनी सत्ता को बचाने और अपनी–अपनी कुर्सी को बचाने की होड़ में शामिल हैं ।

वर्तमान में विश्व वैश्वीकरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है । इस वैश्वीकरण के युग में आतंकवाद भी केवल भारत की समस्या नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व की समस्या बन गई है । इसलिये किसी एक देश को नहीं बल्कि इस समस्या के उन्मूलन के लिये वैश्विक प्रयास होने चाहिये, जैसे मानव अधिकार समस्त विश्व में समान रूप से लागू है वैसे ही आतंकवाद से निपटने के लिये भी वैश्विक नियम, कानून बनाये जाने की आवश्यकता है। अब इस तरह का प्रपंच बंद होना चाहिये कि जिस कृत्य को एक राष्ट्र आतंकवादी कह रहा है,दूसरे के लिये वह आतंकवादी नहीं है । यह मानसिकता बननी चाहिये कि यह विश्व हमारा है, यह धरती हमारी है और इस विश्व को सुन्दर बनाना इस, धरा को वसुन्धरा बनाना हमारा कर्तव्य है,वह चाहे गोरा हो या काला, अमीर हो या गरीब छोटा हो या बड़ा। पंचभूतों के प्रति मानव मात्र के ऋण की सही अदायगी यही हो सकती है।

''सदियॉं लग जाती हैं, आशियॉं बनाने में ।
एक आतंक ही काफी है, इसे उजाड़ने में ।।''

आतंकवाद से अभिप्राय किसी भी हिंसात्मक तरीके से जन सामान्य में भय उत्पन्न करने से है, जिस प्रकार–''मिट्टी कच्ची रहने पर ही कुम्हार बर्तन के आकार में सुधार कर सकता है, पर पके हुए बर्तन के आकार में सुधार की आशा करना मूर्खता है, ठीक उसी प्रकार आतंक की जड़ को काटे बिना आतंकवाद रूपी विशाल वृक्ष नष्ट कर पाना मुश्किल है ।'' आज के समाज में चोरी, डकैती, लूट, अपहरण, बलात्कार, हत्या जैसी अमानवीय कृत्यों का बड़ता हुए ग्राफ किसी से छुपा हुआ नहीं है, पहले प्राकृतिक आपदाओं एवं जीव जन्तुओं से भय भीत होने वाला मानव आज मानव से ही सबसे अधिक भयभीत है । वास्तविकता यह है कि आतंकवाद न तो कोई बीमारी है और ना ही कोई वायरस या जादू टोना है, जिसके लिये कोई इलाज खोजे जाने की प्रतीक्षा में हम बैठे हुए हैं, वास्तव में ये मानव की गिरती हुई नैतिकता और खोती हुई मानवता का ही परिणाम है । इसीलिये यदि हमें सही मायनों में अपने समाज, देश और विश्व में से आतंकवाद को मिटाना है तो अपनी खोई हुई मानवता को ढूंढ कर लाना होगा और सोई हुई इंसानियत को जगाना होगा । किसी ने सच ही कहा है –

''जुर्म होगा उन्हें बहार कहना, जो हमदर्द आदमी के नहीं।
बागियों से वफा की क्या उम्मीद, जो वतन के नहीं, किसी के नहीं।।''

अतंर्राष्ट्रीय आतंकवाद के अध्येता ब्रियां क्रोजर के मतानुसार –''20वीं शताब्दी का आतंकवाद अपने स्वरूप में विलक्षण है, यह समाज और राज्य व्यवस्था के लिये एक कलंक जैसा है, वह अपने स्वरूप में वैश्विक है अर्थात् विश्व भर के आतंकवादियों में आपसी भाईचारा है।'' आतंकवाद का इतिहास अति प्राचीन है। राबर्ट कीडलैण्डट की मान्यता है कि आतंकवाद शब्द फ्रांस की क्रांति और जेकोबिन तानाशाही से जुड़ा है। रूसी क्रांति से भी आतंकवाद को प्रमुख स्थान प्राप्त हो गया है। आधुनिक आतंकवाद का इतिहास 20वीं शताब्दी की शस्त्रीकरण प्रक्रिया से प्रारम्भ प्रतीत होता है । इस समय जो राजनैतिक प्रतिद्वंदिता चली, उससे दो विरोधी विचारधाराओं का जन्म हुआ, फलस्वरूप सत्ता हेतु जो संघर्ष उत्पन्न हुआ उससे भाव का वातावरण बना एवं घातक हथियारों में वृद्धि हुई, जिसने आतंकवाद का विस्तार किया।

* सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहगढ़

आतंकवाद अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा, समृद्धि और स्थिरता के लिये ऐसी चुनौती है, जिससे सम्पूर्ण विश्व किसी न किसी रूप में आहत है । आतंकवाद भय और हिंसा के माध्यम से अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में विश्वास करता है। यह लक्ष्य राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं व्यक्तिगत भी हो सकता है। मानव स्वास्थ्य, मानव जीवन एवं किसी देश की अखण्डता एवं सम्पत्ति को हानि पंहुचाने वाले कार्य ही आतंक या भय उत्पन्न करते हैं, यही आतंकवाद है। आज सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद की विभीषिका से कराह रहा है। भारत भी विगत तीन दशकों से इस समस्या से ग्रसित है।

प्रो. यशपाल के अनुसार–''आज सम्पूर्ण मानवता आतंकवाद से त्रस्त है........इसका खतरा और बढ़ेगा, क्योंकि हम तकनीकी का इस्तेमाल मनुष्य की सृजनात्मक उर्जा को जागृत करने और दिलों के फासले को दूर करने के बजाय केवल भौगोलिक दूरी को कम करने के लिये कर रहे हैं । यही वजह है कि नस्लीय, मजहबी और सांस्कृतिक वर्चस्ववादी आतंकवाद बढ़ रहा है।''

दुनिया के कुछ ऐसे ठेकेदार देशों ने अपने निजी स्वार्थ के लिये 20वीं सदी में आतंकवाद के बीज बोये थे। चाहे वह इजरायल–फिलीस्तीन समस्या हो या भारत–पाकिस्तान विवाद हो, वियतनाम युद्ध हो या उत्तर दक्षिणी कोरिया का आपसी विवाद हो, इन सबके पीछे कहीं न कहीं उन तथाकथित विकसित देशों की महत्वाकांक्षा और निजी स्वार्थ ही रहा है । जहॉ–जहॉ इन देशों ने राज्य किया, वहॉ–वहॉ आतंकवाद फैला कर स्वयं का उल्लू सीधा करते रहे । हम मूर्खों की भांति उनकी इस घिनौनी चाल का शिकार होते रहे। एक ऐसा सत्य जो कटु तो है ही, दर्दनाक भी है और यह सत्य है कि आतंकवाद जिससे विश्व जूझ रहा है, चाहे वह शक्तिशाली अमेरिका हो या छोटा सा द्वीप श्रीलंका । आतंकवाद ने विश्व के अधिकतर देशों को अपनी चपेट में ले लिया है । इतिहास में झॉके तो ज्ञात होता है कि मानव समुदाय को जाति, धर्म, काले–गोरे, हिन्दू–मुसलमान और पता नहीं कितने तरीकों से बांट रखा है, जिसका परिणाम हम लगातार भुगतते आ रहे हैं । ऐसे भयावह परिणाम जिसने सम्पूर्ण विश्व को इतने टुकड़ों में बांट दिया है कि इनकी गिनती करना दुष्कर कार्य है । कई देश आपस में शत्रुता पाले हुए हैं। आतंकवाद मानव समुदाय के इस बंटवारे का ही परिणाम है।

आज आतंकवाद ने लाखों देशों को निगल लिया है। गौरतलब बात यह भी है कि खुद को धर्मनिरपेक्ष कहने वाले अमेरिका के 44वें राष्ट्रपति ओबामा भी बाईबल पर हाथ रखकर शपथ लेते हैं, अपने भाषण में कहते हैं कि–''यह देश इसाईयों, मुस्लिमों, यहूदियों और हिन्दुओं का है।'' इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है, हाल ही के वर्षों में मुम्बई आतंकी हमला, गाजा में इजरायली सेना का अभियान और लिट्टे एवं श्रीलंका सेना के बीच जारी युद्ध, यह सब आतंकवाद का ही परिणाम है । दरअसल देखा जाये तो साम्प्रदायिकता ही आतंकवाद की जननी है, जो चुनौती हमारे सामने है उसका सामना करने के लिये सबसे जरूरी है, मानव एकता। यह तभी सम्भव है जब हम मानव बंटवारे की राजनीति से उभरें, निजी स्वार्थ का परित्याग करें, अन्यथा हम ऐसे ही आतंक की आग में झुलसते रहेंगे।

आतंकवाद के कारण–आतंकवाद का मुख्य कारण आर्थिक एवं सामाजिक समस्याऐं हैं। कहा भी गया है कि– ''जहॉ मानव अधिकारों का हनन होता है, वहीं आतंकवाद पनपता है ।'' बेरोजगारी, गरीबी, अशिक्षा, उत्पीड़न एवं शोषण की भूमिका आतंकवाद का कारण रही है। राजनैतिक महत्वाकांक्षाऐं भी आतंकवाद को प्रेरित करती है, जो देश आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से शक्तिशाली नहीं हैं, वहॉ आतंकवाद को अप्रत्यक्ष रूप से हथियार बनाया जाता है। पाकिस्तान द्वारा जम्मू–कश्मीर में प्रायोजित आतंकवाद इसी का परिणाम है। राजनैतिक इच्छा शक्ति की कमी भी आतंकवाद को पनपने देती है । अफजल गुरू को सजा न देना इसका प्रमुख उदाहरण है।

भारत में आतंकवाद का विस्तार सुरक्षा उपायों में कमी के कारण भी हुआ है। खूफिया सूचनाओं को एकत्र करने एवं उनका सही समय पर विश्लेषण कर आवश्यक कार्यवाही करने में ढीलापन भी एक कारण है । 1984 में इन्दिरा गांधी की हत्या, पंजाब का आतंकवाद, राजीव गांधी की हत्या, जम्मू–कश्मीर का आतंकवाद, 1999 का विमान अपहरण, 11 सितम्बर 2001 को अमरीकी विश्व व्यापार केन्द्र और पेंटागन पर हुए आतंकी हमले, 13 दिसम्बर 2001 को भारतीय संसद पर हमला, 2008 में जयपुर में बम विस्फोट एवं 26.11.2008 को मुम्बई के ताज होटल एवं नरीमन हाउस के आतंकवादी घटना, लंदन में बम विस्फोट एवं पाकिस्तान में बेनजीर भुट्टो की हत्या आदि घटनाओं से स्पष्ट है कि आतंकवाद के पीछे धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक कारण मुख्य हैं।

इंडिया टुडे के सम्पादक प्रभु चावला ने ''अपनी बात'' में लिखा है कि–''हालांकि मुम्बई बम काण्ड के बाद आतंकवाद के खिलाफ जंग में शामिल होने के लिये 94759 लोगों ने अब तक शपथ ली है । देश के राजनेताओं का भी कर्तव्य है कि वोट की राजनीति से ऊपर उठकर भारत के वास्तविक कल्याण के बारे में सोचें एवं देश में साम्प्रदायिक सौहार्द के माहौल को विकसित करने की दिशा में प्रयत्न करें।

आतंकवाद समाप्ति के उपाय–1. देश के प्रत्येक नागरिक को जागरूक होकर आतंकवाद के विरोध में सहयोग करना होगा । 2. प्रत्येक राष्ट्र को शिक्षा एवं रोजगार में वृद्धि करके अमीर–गरीब की खाई को पाटना होगा। 3. शिक्षा राष्ट्रीय एवं नैतिक चरित्र का निर्माण करने वाली होनी चाहिये। 4. प्रत्येक राष्ट्र को अपनी जल, थल एवं वायु (तीनों सेना) को मजबूत करना होगा तथा उचित निगरानी रखनी होगी अर्थात् सुरक्षा तंत्र मजबूत बनाया जावे। 5. आतंकवादी भी हाईटेक हो गये हैं, इन्होनें इंटरनेट अपना लिया है अतः इनके खिलाफ जो भी कदम उठाये जायें उनका प्रचार–प्रसार न हो, तभी इन पर अंकुश लगाया जा सकेगा। 6. सामाजिक रूढ़िवादिता एवं अंध

াविश्वासों को समाप्त करना होगा। 7. मानव अधिकारों की रक्षा होनी चाहिये अन्यथा विद्रोह आतंकवाद में परिणित हो जाता है। 8. राजनीतिज्ञ स्वार्थ रहित होकर प्रजा का पालन पुत्रवत् करें, जिस देश में शासक भ्रष्ट है तो प्रजा का भ्रष्ट चरित्र होना स्वाभाविक है। 9. मनुष्य को मनुष्य बनने की शिक्षा दी जाये नहीं तो मानवता का विनाश हो जायेगा। 10. शोषकों के प्रति विद्रोह दर्शाने के लिये हिंसा के स्थान पर अहिंसा को अपनाया जाना चाहिये। 11. मानवीय गुणों को जागृत कर मानवीय दुर्बलताओं पर विजय पाना चाहिये, जिससे समाज में आतंकवाद जैसी बुराई से बचा जा सके। 12. मानव मूल्यों में वृद्धि करके विश्व में आतंकवाद को दूर किया जा सकता है। 13. आतंकवाद सम्पूर्ण मानव जाति के लिये चुनौती है इसलिये सभी देशों को एकजुट होकर इसका सामना करना चाहिये। कुछ लोग इस बहुलवाद को भारत की कमजोरी के रूप में देखते हैं, लेकिन वस्तुतः यही उसकी असली ताकत है। भारत एक आर्थिक, सांस्कृतिक और सामरिक महाशक्ति है, जिस पर आतंकवादी खरोंचे तो डाली जा सकती हैं, लेकिन उसे तोड़ना असम्भव है। वैसे भी दुनिया का भौगोलिक इतिहास इस बात का गवाह है कि आज तक आतंकवाद के द्वारा किसी धर्मराज्य का गठन नहीं किया जा सका, फिर वह हारी हुई लड़ाई के प्रति किसी गुप्त समर्थन या सहानुभूति का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है –

''जो भरा नहीं है भावों से, जिसमें बहती रसधार नहीं ।
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश को प्यार नहीं।।''

आतंकवाद की यह प्रवृत्ति मानववाद, अमन और विश्व बंधुत्व के विरूद्ध है, इसका उद्‌देश्य हिंसात्मक, जैव–अजैव हथियारों एवं परमाणु आयुधों के माध्यम से विश्व जनमत को प्रभावित करना है। लोकतंत्र एवं विकास कार्यक्रमों को अवरूद्ध कर आतंकवाद का साम्राज्य कायम करना है। यह अपने इस उद्‌देश्य के प्रति बेहद गम्भीर है, विश्व भर के आतंकवादियों के मध्य गठबंधन और राजनीतिक स्वार्थवाद से प्रेरित कुछ राष्ट्रों द्वारा इनको सामाजिक सहयोग, समर्थन और सम्प्रेषण किया जा रहा है, इसका निशाना अब सिर्फ एक क्षेत्र अथवा देश नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व है, जन साधारण में डर और आतंक फैलाना ताकि जनता आतंकवादियों के विरूद्ध उठ न सके और वे अपनी घृणित गतिविधियों को जारी रख सके। ''हर तरफ जुल्म है बेबसी है, सहमा–सहमा सा हर आदमी है।'' आज सम्पूर्ण विश्व में आतंकवाद को समाप्त करने और मानवतावाद को बढ़ावा देने का संकल्प लेना, मानवता वाद के सौहार्द एवं मैत्री की अवधारणा को जनमानस तक पंहुचाना होगा। शैक्षणिक प्रणाली के आमूल परिवर्तन, नैतिकता, भावात्मक एकता, न्याय, पारस्परिक आत्म विश्वास, व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्रीय हित को बढ़ावा देना होगा। बच्चों के जन्म से ही अच्छे संस्कार डालें ताकि आने वाले कल में दुनिया की तस्वीर में अमन और चैन साफ झलके, कहीं आतंक और मातम न हो, सरकार भी इस क्षेत्र में प्रयत्न कर रही है, देश द्रोही के लिये ''पोटा अधिनियम'' लागू किया एवं देश के आतंक को मिटाने के लिये कई एक्ट बनाये गये जिसमें मध्यप्रदेश में इस समस्या से निपटने के लिये 1113 एम पी डी पी एक्ट प्रभावशील किया गया तथा अन्य राज्यों में भी प्रभावशील है लेकिन समाज में पुनः चेतना जागृत करने हेतु मानवता के नन्हे–नन्हे पौधे लगाने होंगे। एक ओर मानव मंगल गृह पर विजय की तैयारी में है, तो दूसरी ओर मानव जाति का पृथ्वी पर मौजूद अस्तित्व पर खतरे के बादल मण्डरा रहे हैं। ऐसा भी नहीं है कि सभ्यता अंत की कगार पर है, परन्तु जब मानवीय व्यवहार और पशु के व्यवहार में आधारभूत अंतर ही न रह जाये तब इसे सभ्य समाज का अंत ही कहना उचित होगा। यह भी कितने क्षोभ की बात है कि विश्व में पूंजीवाद, समाजवाद की तरह आतंकवाद भी एक नकारात्मक विचारधारा के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है। आतंकवाद के बढ़ते दायरे के लिये वर्तमान वैश्विक राजनीति तथा वैश्विक अर्थतंत्र ही जिम्मेदार है, जिसने वैश्विक, सामाजिक संरचना पर प्रहार करते हुए विश्व में विनाश के बीज बोये हैं।

वर्तमान समय में आतंकवाद किसी न किसी रूप में सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित है और सभी विचारकों, राजनीतिज्ञों, नीति निर्धारकों, समाजशास्त्रियों, अंतर्राष्ट्रीय पुलिस अर्थात् इंटरपोल, संयुक्त राष्ट्र संघ, सार्क एवं विश्व के सभी देशों के लिये चिंता का विषय है। यह एक ऐसी ज्वलंत समस्या है जो लगातार सुरसा के मूंह की भांति बढ़ती ही जा रही है और इस पर नियंत्रण पाना न केवल कठिन अपितु चुनौतीपूर्ण है।

न आतंक न आतंक का साया, सिर्फ और सिर्फ शांति, प्रेम और राष्ट्रीय एकता, यही हमारी डगर हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. समकालीन राजनीतिक मुद्दे–डॉ. बी.एल.फड़िया 2. स्वांतेजिक (युद्धनीतिक) अध्ययन –प्रो. लल्लन जी सिंह 3. द न्यू मैन ऑफ पॉवर–सी. राईट मिल्स 4. द पॉपुलेशन ऑफ इंडिया एण्ड पाकिस्तान – किन्सले डेविस 5. द पॉवर एलीट – सी. राईट मिल्स 6. को–ऑपरेशन एण्ड कॉम्पीटीशन एमंग प्रिमिटिव पीपुल्स–मारग्रेट मीड़ 7. लाईफ एण्ड स्टूडेण्ट–सी.एच. कुले 8. द प्रोटिस्टेन्ट इथिक एण्ड स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म–मैक्स बेबर 9. भारत 2008 पत्रिकाऐं 1. इंडिया टुडे – 21 जनवरी 2009 2. अमर उजाला, जनसत्ता समाचार पत्र, क्रानिकल 3. प्रतियोगिता दर्पण 4. आउटलुक 5. दैनिक भास्कर – 28 अगस्त 2006, 23 सितम्बर 2008, 10 नवम्बर 2008 6. आर्थिक जगत 7. इंडियन पोलिटिकल वीकली 9. औद्योगिक व्यापार पत्रिका 10. इण्डिया कैरियर 11. सदन इकॉनोमिक्स 12. समसामयिक घटना चक्र